हफ़्तावार रिसाला : 359
Weekly Booklet : 359

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के
9 वें पीरो मुर्शिद का तज़्किरा, बनाम

फ़ैज़ाने मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात 28

500 सोने के सिक्के 01
महब्बते दुन्या से छुटकारे का फल 18
पानी पर चलते और हवा में उड़ते 09
क़बूलिय्यते दुआ का मक़ाम 21

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**फ़ैज़ाने मा'रूफ़ करख़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
सिने त़बाअ़त	:	ज़िल ह़ज **1445** हि., जून **2024** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"फ़ैज़ाने मा'रूफ़ करख़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه**"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

फ़ैज़ाने मा'रूफ़ करख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 26 सफ़हात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने मा'रूफ़ करख़ी** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ" पढ़ या सुन ले उसे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा कर मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم

कभी अ़ज़ाब नहीं देता (दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत)

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है, **अल्लाह** पाक उस पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है और जिस पर **अल्लाह** पाक रह़मत की नज़र फ़रमाए उसे कभी अ़ज़ाब नहीं देता ।

(افضل الصلوات علی سید السادات، ص40)

ह़श्र की तीरगी, सियाही में   नूर है, शम्ए़ पुर ज़िया है दुरूद
छोड़ियो मत दुरूद को, काफ़ी !   राहे जन्नत का रहनुमा है दुरूद

(दीवाने काफ़ी, स. 23)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

500 सोने के सिक्के

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्बास मुअद्दिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक सय्यिद साहि़ब मेरे पड़ोस में रहते थे जिन के मुआ़शी ह़ालात पहले अच्छे न थे, उन्हों ने मुझे अपना वाक़िआ़ सुनाया कि हमारे हां बच्चे की

विलादत हुई तो घर में कोई ऐसी चीज़ न थी जो अपनी ज़ौजा (Wife) को खिलाता। ग़मज़दा बीवी ने मुझ से फ़रियाद की : ऐ मेरे सर के ताज ! आप पर मेरी ह़ालत ज़ाहिर है, मुझे ग़िज़ा की सख़्त ज़रूरत है ताकि मेरी कमज़ोरी दूर हो, ख़ुदा के लिये कुछ कीजिये। सय्यिद साहिब फ़रमाते हैं : मैं अपनी ज़ौजा की येह ह़ालत देख कर बेताब हो गया और नमाज़े इ़शा के बा'द सौदा सलफ़ (या'नी राशन) वाली दुकान पर गया, जिस से मैं सामान लिया करता था, उस का मुझ पर कुछ क़र्ज़ भी था। मैं ने उस से अपने घर की ह़ालत बयान कर के जल्द रक़म देने की निय्यत के साथ कुछ खाने पीने का सामान त़लब किया मगर उस ने साफ़ मन्अ़ कर दिया। मैं इसी परेशानी के आ़लम में दूसरे दुकानदार के पास गया और उस से भी इसी त़रह़ कहा जैसा पहले से कहा था मगर उस ने भी इन्कार कर दिया। अल ग़रज़ ! जिस जिस से उम्मीद थी उन सब के पास गया लेकिन किसी ने मेरी मदद न की। मैं बहुत उदास हो कर सोचने लगा कि अब किस के पास जाऊं ? इसी सोच बिचार में मैं दरियाए दिज्ला की त़रफ़ गया, वहां एक मल्लाह़ (या'नी कश्ती चलाने वाले) को देखा जो मुसाफ़िरों का इन्तिज़ार कर रहा था। मुझे देख कर उस ने आवाज़ लगाई कि अगर कोई मुसाफ़िर है तो आ जाए। मैं कश्ती में सुवार हुवा और कश्ती चल पड़ी। कश्ती चलाने वाले ने मुझ से पूछा : आप कहां जाएंगे ? मैं ने कहा : मुझे मा'लूम नहीं। मल्लाह़ ह़ैरान हो कर कहने लगा : आप को अपनी मन्ज़िल का ही इ़ल्म नहीं और कश्ती पर बैठ गए हैं ? मैं ने मल्लाह़ को अपने घर की ह़ालत बताई तो वोह बड़ी हमदर्दी के साथ कहने लगा : मेरे भाई ! ग़म न करो, मुझ से जहां तक बन पड़ा मैं तुम्हारी परेशानी ह़ल करने की कोशिश करूंगा। फिर उस ने एक जगह कश्ती रोकी

और दरियाए दिज्ला के कनारे पर एक मस्जिद में ले जा कर कहने लगा : मेरे भाई ! इस मस्जिद में एक बुज़ुर्ग दिन रात मसरूफ़े इबादत रहते हैं, आप उन से दुआ करवाएं, **अल्लाह** पाक ने चाहा तो ज़रूर आप की परेशानी का ह़ल निकल आएगा ।

सय्यिद साहि़ब फ़रमाते हैं : मैं वुज़ू कर के मस्जिद में दाख़िल हुवा तो देखा कि वोह बुज़ुर्ग मेह़राब में नमाज़ अदा फ़रमा रहे हैं । मैं ने भी दो रक्अ़त अदा कीं और सलाम कर के उन के क़रीब बैठ गया । अपने मा'मूलात से फ़ारिग़ हो कर वोह बुज़ुर्ग मुझ से फ़रमाने लगे : **अल्लाह** पाक आप पर रह़म फ़रमाए ! आप कौन हैं ? मैं ने अपना सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया । उन बुज़ुर्ग ने मेरी बात बड़ी तवज्जोह से सुनी और फिर नमाज़ पढ़ने लगे । बाहर बारिश होने लगी और मैं बहुत घबराया और सोचने लगा कि मैं अपने घर से कितना दूर आ गया हूं, न जाने घर वाले किस ह़ाल में होंगे ? मैं इस सख़्त बारिश में अपने घर कैसे पहुंचूंगा । इतने में एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुवा और उन बुज़ुर्ग के क़रीब आ कर बैठ गया । वोह बुज़ुर्ग जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं फ़ुलां शख़्स का नुमाइन्दा हूं, उन्हों ने आप को सलाम और कुछ नज़राना पेश किया है । येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : येह सारी रक़म इस सय्यिद शहज़ादे की ख़िदमत में पेश कर दो । उस ने तअ़ज्जुब करते हुए अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह पांच सो (500) दीनार हैं । फ़रमाया : हां ! येह सब इन को दे दो । उस ने सारी रक़म मुझे दे दी । मैं ने तमाम रक़म चादर में रखी और ह़ज़रत का शुक्रिय्या अदा कर के बारिश में भीगता घर की त़रफ़ चल पड़ा, अपने अ़लाक़े में पहुंच कर उसी राशन वाले दुकानदार को कहा : **अल्लाह**

पाक ने अपने रिज़्क़ के ख़ज़ानों में से मुझे पांच सो (500) दीनार अ़ता फ़रमाए हैं। तुम्हारा मुझ पर जितना क़र्ज़ है वोह ले लो और मुझे खाने का सामान दे दो। दुकानदार ने कहा : फ़िलह़ाल येह रक़म कल तक अपने पास ही रखें और जो चीज़ें चाहिएं वोह ले लीजिये। फिर उस ने शह्द, शकर, तिलों का तेल, चावल, चरबी और बहुत सा खाने का सामान मुझे दिया। मैं ने कहा : मैं इतना सारा सामान कैसे उठाऊंगा। फिर हम दोनों सामान उठा कर घर की त़रफ़ चल दिये। घर पहुंचे तो दरवाज़ा खुला हुवा था, मेरी ज़ौजा मुझे देख कर शिक्वा करते हुए बोली : आप इस नाज़ुक ह़ालत में मुझे छोड़ कर कहां चले गए, भूक और कमज़ोरी ने मेरी ह़ालत ख़राब कर दी। मैं ने कहा : **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से हमारी परेशानी दूर हो गई, येह देखो ! घी, चरबी, शकर, तेल और बहुत सारा खाने का सामान ले आया हूं। वोह बहुत ख़ुश हुई, फिर सब ने खाना खा कर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा किया। सुब्ह़ मैं ने अपनी ज़ौजा को वोह दीनार दिखा कर जब सारा वाक़िआ़ सुनाया तो वोह बहुत ख़ुश हुई और इस ग़ैबी मदद पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा किया, फिर हम ने कुछ ज़मीन ख़रीद ली ताकि काश्त कर के उस के ज़रीए अपने अख़राजात पूरे करें। **अल्लाह** पाक ने उन बुज़ुर्ग की बरकत से हमारी तंगदस्ती व ग़ुर्बत दूर फ़रमा दी, **अल्लाह** पाक उन को हमारी त़रफ़ से अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए। (عیون الحکایات، ص276،277)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

क्या आप जानते हैं ! **अल्लाह** पाक के येह नेक बन्दे और मक़्बूलुद्दुआ़ बुज़ुर्ग कौन थे ? येह सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे।

तआ़रुफ़ और विलादत

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें पीरो मुर्शिद, अ़ज़ीम तबए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम : मा'रूफ़, कुन्यत : अबू मह़फ़ूज़ है। आप बग़दाद शरीफ़ के अ़लाक़े "कर्ख़" में पैदा हुए इसी वज्ह से आप को "कर्ख़ी" कहा जाता है। आप तबए़ ताबेई़[1] बुज़ुर्ग और इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुक़ल्लिद थे। (مسالک السالکین، 1/286، 287)

हिदायत पाने का वाक़िआ़

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़ानदान पहले साह़िबे ईमान न था। **अल्लाह** पाक की रह़मत और आप की बरकत से सब दामने इस्लाम से वाबस्ता हुए। आप के ईमान लाने का वाक़िआ़ बड़ा दिलचस्प और ह़ैरत अंगेज़ है, आप के भाई बयान करते हैं कि मैं और मेरे भाई ह़ज़रते मा'रूफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पढ़ने जाते थे। हम उस वक़्त साह़िबे ईमान न थे, हमारा उस्ताद बच्चों को مَعَاذَاللہ कुफ़्रो शिर्क का सबक़ देता तो मेरे भाई "मा'रूफ़" बुलन्द आवाज़ से अह़द, अह़द (या'नी **अल्लाह** अकेला है, वोह एक है) कहते तो उस्ताद उन्हें ख़ूब मारता यहां तक कि एक दिन उस ने उन्हें इतना मारा कि आप कहीं तशरीफ़ ले गए। मेरी वालिदा रोतीं और कहतीं : अगर **अल्लाह** पाक ने मुझे "मा'रूफ़" वापस इ़नायत फ़रमा दिया तो वोह जिस दीन पर होगा मैं भी उसी दीन पर अ़मल करूंगी। कई साल के बा'द ह़ज़रते

---

1 ... ताबेई़ उन को कहा जाता है जिन्हों ने सह़ाबी से ब ह़ालते ईमान मुलाक़ात की और उन का ख़ातिमा भी ईमान पर हुवा और तबए़ ताबेई़ उन को कहा जाता है जिन्हों ने ताबेई़ से ब ह़ालते ईमान मुलाक़ात की और उन का ख़ातिमा भी ईमान पर हुवा। (معجم لغۃ الفقہاء، ص117)

मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी वालिदा के पास आए तो वालिदा ने पूछा : बेटा ! तुम किस दीन पर हो ? आप ने इर्शाद फ़रमाया : "दीने इस्लाम पर।" वालिदा ने اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ा। इस तरह़ मेरी वालिदए मोह़तरमा और हम सब मुसल्मान हो गए। (بحر الدموع، ص39) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने हर मुरीद व त़ालिब को शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या अ़त़ा फ़रमाया है, उस में सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें तबए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और दसवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से यूं दुआ़ की गई है :

बहरे मा'रूफ़ो सरी मा'रूफ़ दे बेख़ुद सरी

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बहर : वासित़े। **मा'रूफ़ :** भलाई। **बेख़ुद सरी :** आ़जिज़ी, फ़रमां बरदारी।

दुआ़इया मिस्रए़ का मफ़्हूम

या अल्लाह पाक ! मुझे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तुफ़ैल नेकी और भलाई अ़त़ा फ़रमा और ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वासित़ा ! मुझे आ़जिज़ी व इन्किसार का पैकर बना।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अ़रबी शजरा

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक अ़रबी शजरा शरीफ़, ब सीग़ए दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, आप उस में ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى الشَّيْخِ مَعْرُوْفِ نِ الْكَرْخِيْ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ'' ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मतो बरकत नाज़िल फ़रमा और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब और हमारे सरदार शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَضِيَ اللهُ عَنْه पर भी ।

(तारीख़ व शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 154)

एक घराने का हिदायत याब हो जाना

ह़ज़रते आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मेरे पड़ोस में एक शख़्स रहता था जो ईमान वाला न था । एक दिन वोह मेरे पास आ कर कहने लगा : ऐ अबू आ़मिर ! पड़ोसी होने की हैसिय्यत से मेरा आप पर ह़क़ है, मैं आप को रात और दिन के पैदा करने वाले का वासित़ा दे कर कहता हूं कि मुझे **अल्लाह** पाक के किसी वली के पास ले चलिये ताकि वोह मेरे लिये बेटे की दुआ़ करे, मेरे दिल में बेटे की बहुत ख़्वाहिश है । मैं उस को साथ ले कर ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सारा मुआ़मला अ़र्ज़ किया । आप ने उसे इस्लाम की दा'वत दी तो वोह कहने लगा : ऐ मा'रूफ़ ! **अल्लाह** पाक जब तक मुझे हिदायत न दे तब तक आप मुझे हिदायत नहीं दे सकते, मैं आप के पास सिर्फ़ दुआ़ के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कुछ इस त़रह़ दुआ़ की : **या अल्लाह** पाक ! इसे ऐसा बेटा अ़त़ा फ़रमा जो वालिदैन के

साथ हुस्ने सुलूक करे और वोह दोनों उस के हाथ पर मुसल्मान हो जाएं। **अल्लाह** पाक ने अपने मक़्बूल बन्दे की दुआ क़बूल फ़रमाई और उस को एक ऐसा बेटा अ़ता फ़रमाया जो अपनी ज़हानत के सबब अपने वक़्त के तमाम बच्चों से आगे बढ़ गया। जब वोह कुछ बड़ा हुवा तो उस का बाप उसे अपने दीन की ता'लीम दिलाने के लिये छोड़ आया। उस के उस्ताद ने उसे हाथ में तख़्ती पकड़ा कर अभी "बोलो" ही कहा था तो वोह बच्चा कहने लगा : मेरी ज़बान ग़ैरे ख़ुदा को ख़ुदा बोलने से रोक दी गई और मेरा दिल मेरे रब्बे करीम की महब्बत में मसरूफ़ है। इस के बा'द बच्चे ने ऐसी ख़ूब सूरत और **अल्लाह** पाक की पहचान की गहरी बातें कीं जिन्हें सुन कर उस्ताद हैरान रह गया और उस का दिल ज़िन्दा हो गया। उस ने जान लिया कि दीने इस्लाम ही सच्चा दीन है। इस के बा'द बच्चे ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है : क्या वोही सच्चा नहीं जो रुलाता, हंसाता, ज़िन्दगी और मौत देता, मख़्लूक़ के लिये खेती उगाता है ? यक़ीनन वोही इबादत के लाइक़ है लिहाज़ा जो उस का दरवाज़ा छोड़ कर किसी दूसरे के दरवाज़े पर जाता है वोह नुक़्सान उठाता है, वोह अपने बन्दे को गुनाह करते हुए देखता है फिर भी उस की पर्दापोशी फ़रमाता (या'नी गुनाहों को छुपाता) है और अपने बन्दे को बिन मांगे अ़ता करता है। वोह गुनहगारों से बख़्शिश का मुआ़मला करता है।

जब उस्ताद ने बच्चे का येह ईमान अफ़्रोज़ कलाम सुना तो उस के होश उड़ गए और उस ने दिल ही दिल में कलिमए शहादत "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه" पढ़ा। फिर बच्चे को उस के बाप के पास लाया। जब बाप ने दोनों को आते देखा तो ख़ुश हो कर उस्ताद

से पूछा : आप ने मेरे बच्चे को कैसा ज़हीन पाया ? उस ने सारी गुफ़्तगू बच्चे के बाप को बताई। बाप बोला : ख़ुदा की क़सम ! मेरा बेटा ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दुआ की बरकत से ही इस मक़ामो मर्तबे तक पहुंचा है। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के सच्चे रसूल हैं। इस के बा'द बच्चे की मां और तमाम घर वाले इस्लाम ले आए। (الروض الفائق، ص186 ملتقطاً)

दुआए वली में येह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

शाने मा 'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ह़ज़रते अबू मह़फ़ूज़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चराग़े अहले बैते नुबुव्वत, ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ख़ूब इल्मे दीन ह़ासिल किया। आप अपने वक़्त के बहुत बड़े औलियाए किराम में से थे। ह़ज़रते अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से बड़ा ज़ाहिद (या'नी दुन्या से बे रग़बत) कोई नहीं देखा। (تاریخ بغداد، 13/208)

पानी पर चलते और हवा में उड़ते

ह़ज़रते इब्ने मर्दवैह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सोह़बत में बैठे हुए थे, उस दिन मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का चेह्रए मुबारक खिला हुवा देख कर अ़र्ज़ की : ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! मुझे पता चला है कि आप पानी पर चलते हैं ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : मैं कभी पानी पर नहीं चला बल्कि जब मैं पानी को पार करने का इरादा करता हूं तो उस की दोनों त़रफ़ें (Sides) आपस में मिल जाती हैं और मैं उस पर क़दम रख कर चलने लग जाता हूं।

ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोग कहते हैं कि ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पानी पर चलते हैं, अगर मुझे कहा जाए कि आप हवा में उड़ते हैं तो मैं इस बात की भी तस्दीक़ करूंगा।

(الروض الفائق، ص183)

बारगाहे मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़ारसी शे'र में अ़र्ज़ करते हैं :

یا شہِ مَعروف ما را رہ سوئے معروف دِہ

तरजमा : ऐ ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी (ऐ नेकियों के बादशाह) ! हमें नेकी की त़रफ़ राह दे !

मक़ामे मा'रूफ़ और उ़लूम की अस्ल

करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और बहुत बड़े मुह़द्दिस ह़ज़रते यह़्या बिन मई़न رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا अक्सर ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ ला कर मसाइल मा'लूम किया करते, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : मुझे पता चला है कि आप ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास जाया करते थे, क्या उन के पास इ़ल्मे ह़दीस था ? तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे लख़्ते जिगर ! उन के पास मुआ़मले की अस्ल या'नी **अल्लाह** पाक का तक़्वा (या'नी **अल्लाह** पाक का डर) था।

(قوت القلوب، 1/263)

सज्दए सह्व का मुआ़मला

करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और बहुत बड़े मुह़द्दिस ह़ज़रते यह़्या बिन मई़न رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا एक

मरतबा ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते यह़या बिन मईन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं इन से "सज्दए सह्व" के मुतअ़ल्लिक़ पूछना चाहता हूं। इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इन्हें ख़ामोश रहने का फ़रमाया लेकिन वोह ख़ामोश न रहे और अ़र्ज़ की : ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! आप सज्दए सह्व के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं ? ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : येह दिल के लिये सज़ा है कि वोह नमाज़ से ग़ाफ़िल हो कर दूसरी त़रफ़ क्यूं मुतवज्जेह हुवा। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : येह बात आप की ज़हानत पर दलालत करती है। (تاریخ بغداد، 13/201، 202)

आ़दाते मुबारका और पाकीज़ा किरदार

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें तबए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बिग़ैर किसी ज़रूरत के कोई सबब इख़्तियार न फ़रमाते बल्कि ब क़दरे ज़रूरत ही लेते। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते कि मैं अपने रब के घर में मेहमान हूं, अगर वोह मुझे खिलाता है तो खा लेता हूं और अगर वोह मुझे भूका रखता है तो सब्र करता हूं यहां तक कि वोह मुझे खिलाए। आप कोई शै जम्अ़ कर के रखते न लम्बी उम्मीदें बांधते बल्कि आप विलायत के उस अ़ज़ीम मर्तबे पर पहुंचे हुए थे कि एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ तक ज़िन्दा रहने की उम्मीद न होती, जब ज़ोह्र की नमाज़ पढ़ा लेते तो अपने हमसायों से फ़रमाते : "अपने लिये कोई ऐसा शख़्स तलाश कर लो जो तुम्हें नमाज़े अ़स्र पढ़ाए।" गोया आप **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी

जान है ! जब मैं अपनी आंखें झपक्ता हूं तो येह गुमान करता हूं कि कहीं मेरी पलकें खुलने से पहले ही **अल्लाह** पाक मेरी रूह़ क़ब्ज़ न फ़रमा ले और जब अपनी पलकें उठाता हूं तो येह गुमान होता है कि कहीं इन्हें झुकाने से पहले ही मौत का वा'दा न आ जाए और जब कोई लुक़्मा लेता हूं तो येह गुमान होता है इसे ह़ल्क़ से उतारने न पाऊंगा कि मौत इसे गले में रोक देगी। ऐ औलादे आदम ! अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो, क्यूं कि तुम से जो वा'दा किया जाता है वोह हो कर रहेगा।" (شعب الایمان، 7/355، حدیث:10564) के आ़मिल थे। (قوت القلوب، 2/30)

ऐ आ़शिक़ाने औलियाए किराम ! ज़िन्दगी दो पल की है, हम नहीं जानते कि हम अपनी ज़िन्दगी का अक्सर ह़िस्सा गुज़ार चुके या कम, अलबत्ता मौत किसी वक़्त, कहीं भी आ सकती है, काश ! हम मरने से पहले मौत की तय्यारी करने वाले बन जाएं और हर वक़्त मौत को याद करते रहें, काश ! हम सुन्नतों के रास्ते पर चल पड़ें, ऐ काश ! जब हमारा आख़िरी वक़्त हो, लब पर कलिमए त़य्यिबा और दुरूदो सलाम हो, मदीनए पाक में हों और आंखों के सामने जल्वए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हो।

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में
मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 112)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अज़ान देते हुए कपकपी त़ारी होना

अबू बक्र बिन अबू त़ालिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मस्जिद में दाख़िल हुवा, हम लोग एक

जमाअ़त की सूरत में थे, आप भी घर से मस्जिद तशरीफ़ लाए और اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ الله कहा, हम ने सलाम का जवाब दिया, आप ने दुआ़ फ़रमाई कि **अल्लाह** पाक आप लोगों को चैन व सलामती वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाए और हमें और आप को दुन्या में ग़मों से राह़त अ़ता फ़रमाए। फिर आप अज़ान देने के लिये बढ़े और अज़ान देना शुरूअ़ की तो बे क़रार हो गए और आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब कपकपी त़ारी हो गई, जब आप ने اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا الله कहा तो आप की अब्रूओं और दाढ़ी के बाल खड़े हो गए, मुझे ख़ौफ़ हुवा कि आप अज़ान मुकम्मल नहीं कर सकेंगे और आप की कमर भी झुक गई, क़रीब था कि ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते।

(حلیۃ الاولیاء، 8/404، حدیث:12685)

तू डर अपना इनायत कर, रहें इस डर से आंखें तर

मिटा ख़ौफ़े जहां दिल से, मिटा दुन्या का ग़म मौला

रातों रात बग़दाद शरीफ़ से मक्कए पाक

सिल्सिलए क़ादिरिय्या के बुज़ुर्ग ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को एक मरतबा त़वाफ़ करने की ख़्वाहिश हुई तो आप रातों रात अपने शह्र से मक्का शरीफ़ पहुंचे और त़वाफ़ कर के वापस तशरीफ़ ले आए।

(जामेअ़ करामाते औलिया, 2/491)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! **अल्लाह** पाक ने अपने औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को बड़ी अ़ज़मतो बुज़ुर्गी से नवाज़ा है, औलियाए किराम की करामात में से एक क़िस्म को "त़य्युल अ़र्द़" कहा जाता है, इस का मत़लब है ज़मीन का लपेट दिया जाना। **अल्लाह** पाक के येह औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से एक क़दम में कई

कई मील का सफ़र कर लेते हैं, गोया महीनों का सफ़र घन्टों और मिनटों में तै हो जाता है। हमारे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी उन्ही औलियाए किराम में से थे।

जो अल्लाह पाक ने चाहा वोही हुवा

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आज सुब्ह़ हमारे हां बच्चा पैदा हुवा है और मैं सब से पहले आप के पास येह ख़बर ले कर आया हूं ताकि आप की बरकत से हमारे घर में ख़ैर नाज़िल हो। ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम्हें अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे। यहां बैठ जाओ और सो मरतबा येह कहो "مَا شَاءَ اللهُ كَانَ" या'नी **अल्लाह** पाक ने जो चाहा वोही हुवा। उस ने सो मरतबा येह पढ़ लिया तो आप ने दोबारा पढ़ने का फ़रमाया। उस ने सो मरतबा फिर पढ़ा तो आप ने मज़ीद पढ़ने का फ़रमाया। अल ग़रज़ इस त़रह़ पांच बार पढ़ने का फ़रमाया। इतने में एक वज़ीर की वालिदा का ख़ादिम एक ख़त़ और थेली ले कर ह़ाज़िर हुवा और कहा : या सय्यिदी ! उम्मे जा'फ़र आप को सलाम कहती हैं, उन्हों ने येह थेली आप की ख़िदमत में भिजवाई है और अ़र्ज़ की है कि आप ग़ुरबा व मसाकीन में येह रक़म तक़्सीम फ़रमा दें। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने लाने वाले से फ़रमाया : "रक़म की थेली इस शख़्स को दे दो, इस के हां बच्चे की विलादत हुई है।" क़ासिद (या'नी पैग़ाम पहुंचाने वाले) ने अ़र्ज़ की : येह 500 दिरहम हैं, क्या सब इसे दे दूं ? आप ने फ़रमाया : "हां ! सारी रक़म इसे दे दो, इस ने पांच सो मरतबा "مَا شَاءَ اللهُ كَانَ" कहा था।"

फिर उस शख़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "येह पांच सो दिरहम तुम्हें मुबारक हों, अगर इस से ज़ियादा मरतबा पढ़ते तो हम भी उतनी ही मिक़्दार मज़ीद बढ़ा देते (जाओ ! येह रक़म अपने घरबार पर ख़र्च करो) ।" (عیون الحکایات، ص277)

मैं हूं साइल मैं हूं मंगता या कर्ख़ी मेरी झोली भर दो
हाथ बढ़ा कर डाल दो टुकड़ा या कर्ख़ी मेरी झोली भर दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मसाइब पर सब्र कुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है

बारगाहे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه में किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मुझे बताइये कि मैं **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) कैसे ह़ासिल कर सकता हूं ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस का हाथ पकड़ कर एक अमीर के दरवाज़े पर ले गए । दरवाज़े पर एक ग़ुलाम खड़ा था जिस की एक टांग टूटी हुई थी । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस की त़रफ़ इशारा कर के उस शख़्स का हाथ पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : इस की त़रह़ हो जाओ, **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब (या'नी नज्दीकी) ह़ासिल कर लोगे (या'नी जिस त़रह़ येह ग़ुलाम टूटी हुई टांग के बा वुजूद अपने आक़ा के दरवाज़े पर ह़ाज़िर है इस त़रह़ तुम भी हर ह़ाल में अपने रब की रिज़ा पर राज़ी रहो और उस की इ़बादत करते रहो) । (الروض الفائق، ص183)

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी का ग़ौसे पाक को सलाम

ख़लीफ़ए ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ारे मुबारक पर ह़ाज़िर हुवा, मेरे पीरो मुर्शिद

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सलाम किया तो ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ से आवाज़ आई : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا سَيِّدَ اَهْلِ الزَّمَانِ या'नी ऐ ज़माने के सरदार आप पर भी सलाम हो। (بہجۃ الاسرار، ص53)

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23)

अल्लाह पाक की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसार

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का पड़ोसी था, एक रात मैं ने आप को रोते और कुछ अश्आ़र पढ़ते सुना, जिन का तरजमा येह है : ﴿1﴾ कौन सी चीज़ मुझ से गुनाह कराना चाहती है, मुझे गुनाहों में मश्ग़ूल रखती है और मुझ से दूर नहीं होती। ﴿2﴾ अगर तू मुझे रह़्म फ़रमाते हुए बख़्श दे तो गुनाह मुझे कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते, अब तो मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है।

(صفۃ الصفوۃ، 2/212)

दुआ़ए ह़ज़रते मा 'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सिल्सिल क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या सय्यिदी (या'नी ऐ मेरे सरदार) ! दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** पाक मेरे दिल को नर्म कर दे। तो आप ने उसे इस दुआ़ को पढ़ने की तरग़ीब दिलाई : ''يَا مُلَيِّنَ الْقُلُوْبِ! لَيِّنْ قَلْبِيْ قَبْلَ اَنْ تُلَيِّنَهٗ عِنْدَ الْمَوْتِ या'नी ऐ दिलों को नर्म फ़रमाने वाले ! मेरे दिल को भी नर्म कर दे इस से पहले कि तू मौत के वक़्त इसे नर्म करे।'' (الروض الفائق، ص185) اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

रिक़्क़ते क़ल्बी किसे कहते हैं ?

दिल की नरमी को रिक़्क़ते क़ल्बी कहते हैं, येह **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी ने'मत है, ह़दीसे पाक में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "रिक़्क़ते क़ल्ब (या'नी दिल की नरमी और गिर्या वग़ैरा) के वक़्त दुआ को ग़नीमत जानो कि वोह रह़मत है।" (کنز العمال، 1/48، حدیث:3367)

उ़लमाए किराम ने दुन्या में सआ़दत मन्दी की अ़लामतों में से एक अ़लामत दिल की नरमी बयान फ़रमाई है।

(تفسیر روح البیان، پ12، ہود، تحت الآیۃ:105، 4/187 ملخصًا)

बारगाहे रिसालत में अमीरे अहले सुन्नत अ़र्ज़ करते हैं :

क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्त है इस को नरमी अ़त़ा कीजिये
जगमगा दीजे क़ल्बे सियाह लुत़्फ़ बदरुद्दुजा कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 505)

तक़्वे की बेहतरीन मिसाल

ह़ज़रते उ़बैद बिन मुह़म्मद वर्राक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक लकड़ी पड़ी थी, उस पर पाउं रख कर गुज़रने की बजाए आप उस लकड़ी को फलांग कर गुज़रे। आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : इसे फलांगने की क्या वज्ह है ? फ़रमाया : इस लिये ताकि उस का मालिक ह़रज में न पड़े। (या'नी हो सकता है कि उस लकड़ी पर पाउं पड़ने से उस के टूटने या कमज़ोर होने या निशान ज़दा होने का अन्देशा हो जिस की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस पर पाउं न रखा ताकि उस के मालिक को बा'द में परेशानी न हो।)

(حلیۃ الاولیاء، 8/409، رقم:12708)

अमीरे अहले सुन्नत की एह़तियात़

मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه यादगारे अस्लाफ़ हैं (या'नी आप के आ'माल व किरदार को देख कर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की याद आती है)। आप भी बड़े मोह़तात़ फ़िद्दीन (या'नी दीन के मुआ़मले में एह़तियात़ करने वाले) हैं, आप की हुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़मले में एह़तियात़ का एक वाक़िआ़ पढ़िये और लोगों के हुक़ूक़ का ख़याल रखने का ज़ेह्न बनाइये :

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि एक बार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह चन्द इस्लामी भाई कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, ख़ुश क़िस्मती से मैं भी साथ था, एक गली से गुज़रते हुए आगे बजरी पड़ी हुई नज़र आई। आप ने फ़रमाया कि अगर हम यहां से गुज़रेंगे तो डर है कि बजरी का कुछ ह़िस्सा फैल कर ज़ाएअ़ हो जाएगा लिहाज़ा मुनासिब येह है कि हम दूसरी जगह से निकल जाएं, चुनान्चे दूसरी गली का रास्ता इख़्तियार किया गया। (हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें, स. 16)

अल्लाह पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلى الله عليه واله وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

महब्बते दुन्या से छुटकारे का फल

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के दसवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक के फ़रमां बरदार बन्दे

किस सबब से उस की इताअ़तो फ़रमां बरदारी पर क़ादिर होते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "उन के दिलों से दुन्या की महब्बत निकल जाने की वज्ह से, अगर उन के दिलों में दुन्या की महब्बत होती तो वोह एक सज्दा भी सहीह़ त़रह न कर पाते।" (المستطرف، ص154)

बग़्दाद शरीफ़ में फ़ौत होने का हुक्म

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बग़्दाद शरीफ़ के बारे में अपने इरादे का इज़्हार करते हुए फ़रमाते : मुझे तो बग़्दाद में फ़ौत होने का हुक्म दिया गया है क्यूं कि इस शह्र के येह नेक लोग सच्चे अब्दालों में से हैं। (اتحاف السادة المتقين، 12/560)

इन्तिक़ाल शरीफ़

इल्मो अ़मल और फ़ैज़ो करम का जगमगाता आफ़्ताब 2 मुह़र्रम शरीफ़ 200 हिजरी में इस दुन्या से सूए आख़िरत रवाना हुवा, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा में तीन लाख अफ़्राद ने शिर्कत की। (الروض الفائق، ص188)

आप का अ़ज़ीमुश्शान मज़ार शरीफ़ बग़्दादे मुअ़ल्ला में ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ से कुछ फ़ासिले (तक़्रीबन 6 किलो मीटर) पर है। हज़ारों आ़शिक़ाने औलिया आप के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अपने दिलों को तस्कीन देते और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत से फ़ैज़्याब होते हैं।

30 हज़ार गुनहगारों से अ़ज़ाब दूर हो गया

एक बुज़ुर्ग से मन्क़ूल है कि मैं ने अपने भाई को मरने के एक साल बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ मेरे भाई ! مَافَعَلَ اللهُ بِكَ" या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो उस ने जवाब

दिया : अब मुझे आज़ाद कर दिया गया है क्यूं कि जब ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमारे पास दफ़्न हुए तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दाएं, बाएं, आगे, पीछे से अ़ज़ाब में गरिफ़्तार तीस तीस हज़ार गुनहगारों को नजात दे दी गई। (الروض الفائق، ص188)

मक़ामे मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ह़ज़रते अह़मद बिन फ़त्ह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो मैं ने पूछा कि "**अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" तो उन्हों ने कहा कि अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! हमारे और उन के दरमियान बहुत से पर्दे हैं। ह़ज़रते मा'रूफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जन्नत के शौक़ और जहन्नम के ख़ौफ़ से **अल्लाह** पाक की इबादत नहीं करते थे बल्कि क़ुर्बे इलाही (या'नी **अल्लाह** पाक की नज़्दीकी) के शौक़ में इबादत करते थे लिहाज़ा **अल्लाह** पाक ने उन्हें रफ़ीक़े आ'ला की त़रफ़ उठा लिया और अपने और उन के दरमियान के पर्दे उठा लिये, येही वोह मुजर्रब इक्सीर है। लिहाज़ा जिस ने बारगाहे इलाही में कोई ज़रूरत पेश करनी हो तो उसे चाहिये कि ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** पाक से दुआ़ मांगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم उस की दुआ़ ज़रूर क़बूल होगी। (صفة الصفوة، 214/2)

ज़रूरत पूरी हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है कि मैं ने अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को येह फ़रमाते हुए सुना कि "ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़ब्रे अन्वर पर तमाम ज़रूरतें पूरी होती हैं लिहाज़ा जो कोई इन के मज़ार के पास

सो मरतबा सूरए इख़्लास की तिलावत करे फिर **अल्लाह** पाक से सुवाल करे तो **अल्लाह** पाक उस की ज़रूरत को पूरा फ़रमा देगा।"

(الروض الفائق، ص188۔ تاریخ بغداد، 1/134)

मेरा काम हो गया

ह़ज़रते यह़या बिन सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मेरी एक ह़ाजत थी और मैं काफ़ी तंगदस्त था, ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हुवा, मैं ने तीन बार सूरए इख़्लास की तिलावत की और उस का सवाब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और तमाम मुसल्मानों की अरवाह़ को पहुंचाया, फिर अपनी ज़रूरत बयान की। जैसे ही मैं वहां से वापस गया मेरी ह़ाजत पूरी हो चुकी थी। (الروض الفائق، ص188)

क़बूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के मक़ामात बयान करते हुए अपनी किताब "अह़सनुल विआ़ लि आदाबिद्दुआ़" में फ़रमाते हैं : मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, या'नी आप के मज़ार शरीफ़ पर दुआ़ क़बूल होती है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 137)

मज़ाराते औलिया की बरकात

ह़ज़रते अह़मद बिन अ़ब्बास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं बग़दाद शरीफ़ से निकला तो एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई जिस पर इबादत के आसार नज़र आ रहे थे, उस ने मुझ से पूछा : आप कहां से आ रहे हैं ? मैं ने जवाब दिया : बग़दाद से भाग कर आ रहा हूं क्यूं कि मैं ने वहां फ़साद देखा है, लिहाज़ा मुझे डर है कि वहां के लोगों को ज़मीन में न धंसा दिया

जाए। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : आप वापस चले जाइये और डरिये मत, क्यूं कि बग़दाद में चार ऐसे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के मज़ारात हैं जिन की बरकत से बग़दाद वाले तमाम बलाओं से महफ़ूज़ हैं। मैं ने पूछा : वोह कौन हैं ? जवाब दिया : ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी, ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी और ह़ज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم हैं। चुनान्चे मैं वापस आ गया, इन **अल्लाह** वालों के मज़ारात की ज़ियारत की और उस साल मैं (बग़दाद से) न निकला। (تاریخ بغداد، 1/133)

अल्लाह पाक की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

चार मशाइख़ ज़िन्दों की त़रह़ इख़्तियारात रखते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने चार बुज़ुर्गों को देखा जो अपनी क़ब्रों में भी ज़िन्दों की त़रह़ इख़्तियार रखते हैं। उन में से एक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, दूसरे ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी, तीसरे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़क़ील मन्जिबी और चौथे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ह़या बिन क़ैस ह़र्रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم हैं।

(بہجۃ الاسرار، ص124)

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर दुन्या से चले जाएं ह़ुकूमत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 383)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मेरे वसीले से दुआ़ करो

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भतीजे ह़ज़रते या'क़ूब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है : मेरे चचाजान ने मुझ से फ़रमाया : बेटा ! जब तुम्हें **अल्लाह**

पाक से कोई ह़ाजत हो तो मेरा वसीला दे कर उस से सुवाल करना।

(حلیۃ الاولیاء، 8/408، حدیث:12701)

ह़ज़रते सरी सक़ती बयान करते हैं कि ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुझे नसीह़त फ़रमाई कि "जब तुम्हें कुछ त़लब करना हो तो इस त़ह़ त़लब किया करो : **या अल्लाह** पाक! मा'रूफ़ कर्ख़ी के सदक़े मुझे फ़ुलां चीज़ अ़त़ा फ़रमा। तो यक़ीनन वोह चीज़ तुम्हें मिल जाएगी।"

(تذکرۃ الاولیاء، ص234)

क़ब्रे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शान

5वीं सदी हिजरी के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते ख़त़ीब बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़ब्रे मुबारक ह़ाजतें और ज़रूरतें पूरी होने के लिये मुजर्रब (या'नी आज़माया हुवा) है।

(تاریخ بغداد، 1/134 ملخصًا)

छटी सदी हिजरी के जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार की ह़ाज़िरी तिरयाक़ और मुजर्रब अ़मल है। (صفۃ الصفوۃ، 2/214)

13वीं सदी हिजरी के फ़िक़्हे ह़नफ़ी के अ़ज़ीम इमाम ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े बुज़ुर्गों में से हैं, आप की दुआ़एं क़बूल होती थीं, उन के मज़ार शरीफ़ के वसीले से बारिश के लिये दुआ़ की जाती है, आप ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के उस्तादे मोह़तरम थे।"

(ردالمحتار 1/141)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! पहले का ज़माना कितना अच्छा था, लोग ख़ुश अ़क़ीदा और औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم की बारगाहों में ह़ाज़िरी देने वाले बल्कि उन के वसीले से दुआ़एं करने वाले होते थे। अभी जिन बुज़ुर्ग ने ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़ज़ाइल बयान किये येह ख़ुद बहुत बड़े आ़लिम व मुफ़्ती थे। आप का बेहतरीन इ़ल्मी कारनामा ब सूरते "फ़तावा शामी" दुन्या भर में मश्हूरो मा'रूफ़ है और अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم की शान बयान कर रहे हैं, काश ! इन की कुतुब से इस्तिफ़ादा करने (या'नी फ़ाएदा उठाने) वाले इन की ज़ात व किरदार को भी फ़ॉलो करें और औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के बारे में अपने अ़क़ाइदो नज़रिय्यात को दुरुस्त करें।

एक मुस्लिम साइन्स दां का कॉलम

कॉलम निगार लिखते हैं : भोपाल में एक जय्यिद आ़लिम साह़िब ने हम स्कूल के बच्चों को औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के बारे में बताया और अपना मक़्सद पूरा करने के लिये ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का वसीला पेश करने की तरग़ीब दिलाई थी। वोह दुआ़ येह थी :

خُداوندا بمقصودم رسان زُود — بحقِ حضرتِ معروف کرخی
نِگہداری زِ آفت ہائے چرخی — بحقِ حضرتِ معروف کرخی

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी के वासित़े मेरा मक़्सूद जल्द अ़त़ा फ़रमा।
ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी के वासित़े आस्मानी व ज़मीनी आफ़ात से ह़िफ़ाज़त फ़रमा।

''ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه'' के बारे में येह कॉलम (13 जूलाई को) छपने के दो दिन बा'द एक दोस्त का फ़ोन आया कि उन्हें येह कॉलम बेह़द पसन्द आया और उन्हों ने इस की दो सो कॉपियां दोस्तों और जानने वालों में तक़्सीम कर दीं और फिर उन्हों ने इस दुआ़ की एक बड़ी बरकत यूं बयान की, कि उन के एक दोस्त का बेटा तीन साल से गुमशुदा था। बड़ी कोशिश और तलाश और पोलीस में रिपोर्ट दर्ज कराने के बा वुजूद बेटा न मिल सका और वोह सीने पर सब्र का पथ्थर रख कर बैठ गए। इन्हों ने अपने दोस्त को येह कॉलम पढ़ कर ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से दुआ़ करने का कहा तो उन्हों ने वुज़ू किया, दो रक्अ़त नफ़्ल दुआ़ए ह़ाजत अदा किये और निहायत रिक़्क़त से **अल्लाह** पाक से ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से अपने बेटे की वापसी की दुआ़ मांगी। बक़ौल उन के (या'नी उन के कहे के मुत़ाबिक़) वोह नमाज़ और दुआ़ मांग कर बैठ गए, आधा घन्टा भी न गुज़रा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई, उन्हों ने बाहर जा कर देखा तो अपने बेटे को खड़ा पाया। कोई उसे दरवाज़े पर छोड़ गया था।

अल्लाह पाक की औलियाए किराम पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
कभी अ़ज़ाब नहीं देता (दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत)	1	रिक़्क़ते क़ल्बी किसे कहते हैं ?	17
		तक़्वे की बेहतरीन मिसाल	17
500 सोने के सिक्के	1	अमीरे अहले सुन्नत की एह़तियात़	17
तआ़रुफ़ और विलादत	5	महब्बते दुन्या से छुटकारे का फल	17
हिदायत पाने का वाक़िआ़	5	बग़दाद शरीफ़ में फ़ौत होने का हुक्म	19
शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर	6	इन्तिक़ाल शरीफ़	19
		30 हज़ार गुनहगारों से अ़ज़ाब दूर हो गया	19
अ़रबी शजरा	7		
एक घराने का हिदायत याब हो जाना	7	मक़ामे मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	20
शाने मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	9	ज़रूरत पूरी हो गई	20
मक़ामे मा'रूफ़ और उ़लूम की अस्ल	10	मेरा काम हो गया	21
सज्दए सह्व का मुआ़मला	10	क़बूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम	21
आ़दाते मुबारका और पाकीज़ा किरदार	11	मज़ाराते औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की बरकात	21
अज़ान देते हुए कपकपी त़ारी होना	12		
रातों रात बग़दाद शरीफ़ से मक्कए पाक	13	चार मशाइख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ज़िन्दों की त़रह़ इख़्तियारात रखते हैं	22
जो **अल्लाह** पाक ने चाहा वोही हुवा	14		
मसाइब पर सब्र क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है	15	ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी के वसीले से दुआ़	22
ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी का ग़ौसे पाक को सलाम	15	एक मुस्लिम साइन्स दां का कॉलम	24
दुआ़ए मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बरकात	16		

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज अबू उसैद उबैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। مَاشَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से खुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शोबा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)